शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

शिक्षा एवं भारत में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता

डॉ० रीता सिंह
PDFWM (UGC), ललित कला विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

सारांश

"मुनश्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

स्वामी विवेकानन्द

युग पुरुष महात्मा गाँधी ने शरीर, मन और आत्मा, इन तीनों के विकास पर समान बल दिया है। उनके शब्दों में– "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से हैं

साधारणतया शिक्षा शब्द को सभी प्रयोग करते हैं। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है, और यह कर्म मनुश्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। उच्च शिक्षा का स्वतंत्र भारत में विस्तार हुआ है लेकिन उच्च शिक्षा क्या हमारे देश के छात्रों को जीवन दृष्टि देने में या उनकी भौतिक आवश्यताओं की पूर्ति करने में सफल हुई है। किसी भी देश की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण स्तर उच्च शिक्षा होता है। अधिकांशतः विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा दी जाती है तथा राष्ट्र निर्माण की नीव यही पड़ती है।

विश्वविद्यालयों की इसी भूमिका को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयों को "किसी राष्ट्र के आंतरिक जीवन के पुण्यस्थान" की संज्ञा दी है। इन दोनों ही कथनों से यह बात स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा जिसे हम विश्वविद्यालयी शिक्षा भी कहते है, का राष्ट्रीय जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है।

महत्वपूर्ण शब्दः *उच्च शिक्षा, शिक्षा, स्वामी विवेकानन्द*, Mahatma Gandhi , Plato, Aristotle

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० रीता सिंह,
''शिक्षा एवं भारत में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता'',
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 101–106

डॉ० रीता सिंह

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा (higher education) का अर्थ है सामान्य रूप से सबको दी जानेवाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विशद तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कॉलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो ऐच्छिक होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक एवं व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

आज उच्च शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के कारणों में एक कारण उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्र शिक्षक असंतुलन भी है। विभिन्न शिक्षण संस्थानों के प्राध्यापकों के आधे पद रिक्त पड़े हुए है तथा छात्रों को पढ़ाने के नाम पर मात्र खानापूर्ति हो रही है। अतः इस स्थिति को समाप्त किया जाना भी जरूरी है।

उच्च शिक्षा में नयी चिंतन पदधितियों को बढ़ावा तथा उचित मात्रा में अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा में शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए साथ ही इसकी गुणवत्ता पर भी ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इस हेतु महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि योग्य विद्यार्थियों को, जो अच्छा शोध कार्य कर सकें उन्हें इस प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाय। इसमें उनकी कुशलता तथा गुणवत्ता को परखकर आगे के लिए अवसर दिया जाय। इसके साथ ही शोध के दायरे में व्यापक बदलाव करना होगा तथा उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुकूल करना होगा।

साधारणतया **शिक्षा** शब्द को सभी प्रयोग करते हैं। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है, और यह कर्म मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है।

"मुनष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

स्वामी विवेकानन्द

युग पुरुष महात्मा गाँधी ने शरीर, मन और आत्मा, इन तीनों के विकास पर समान बल दिया है। उनके शब्दों में– "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से हैं

By Education I mean an all round drawing out of the best in child and man-body, mind and spirit.

Mahatma Gandhi

"शिक्षा का कार्य मनुष्य शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य है"।

Education consist in giving to the body and soul all the perfection to which they are susceptible

Plato.

अरस्तु मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास पर बल देते थे। उनका विकास था कि उचित शारीरिक एवं मानसिक विकास होने पर ही मनुष्य आत्मा की अनुभूति कर सकता है। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण ही शिक्षा है।"

Education is the creation of a sound mind in a sound body.

Aristotle

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। उच्च शिक्षा का स्वतंत्र भारत में विस्तार हुआ है लेकिन उच्च शिक्षा क्या हमारे देष के छात्रों को जीवन दृष्टि देने में या उनकी भौतिक आवश्यताओं की पूर्ति करने में सफल हुई है। किसी भी देश की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण स्तर उच्च शिक्षा होता है। अधिकांशतः विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा दी जाती है तथा राष्ट्र निर्माण की नीव यही पड़ती है।

"शिक्षा के उद्देश्य" नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में प्रोफेसर हवाइडेड ने विश्वविद्यालयों का राष्ट्र निर्माण में योगदान के संदर्भ में लिखा है। विश्वविद्यालयों ने हमारी सभ्यता के बौद्धिक मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित किया है। यही से विधिज्ञ, राजनीतिविद, चिकित्सक, वैज्ञानिक, प्राध्यापक एवं साहित्यसेवी निकले हैं। विश्वविद्यालय ही उन आदर्शों के घर रहे हैं जिनकी सहायता से लोग अपने वर्तमान युग के संक्षोभ का सामना करते है। राधाकृष्णन विश्वविद्यालय आयोग ने विश्वविद्यालयों की इसी भूमिका को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयों को "किसी राष्ट्र के आंतरिक जीवन के पुण्यस्थान" की संज्ञा दी है। इन दोनों ही कथनों से यह बात स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा जिसे हम विश्वविद्यालयी शिक्षा भी कहते है,का राष्ट्रीय जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत में उच्च शिक्षा का इतिहासः–

ऐसी शिक्षा का स्वरूप विशदता के साथ भारतवर्ष में प्रतिष्ठित हुआ था। उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरुकुलों की बड़ी विशेषता यह थी कि उनमें प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा शिष्याध्यापक प्रणाली (मोनीटोरियल सिस्टम) से दी जाती थी। सबसे ऊपर के छात्र अपने से नीचे वर्ग के छात्रों को पढ़ाते थे और वे अपने से नीचे वाले को। यद्यपि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैष्य के पुत्र ही भर्ती किए जाते थे और वर्णों के अनुकूल ही बालकों को शिक्षा भी दी जाती थी तथापि नित्यधर्म, स्वच्छता, शील और शिष्टाचार की शिक्षा प्रत्येक छात्र को दी जाती थी और प्रत्येक छात्र को गुरुकुल में रहकर आश्रम का समस्त कार्य स्वयं करना पड़ता था। कुछ गुरुकुल तो इतने बड़े थे कि वहाँ एक–एक कुलपति, दस सहस्त्र ऋषियों और ब्रह्मचारियों का अन्य दानादि देकर उनको पढ़ाने का प्रबंध करते थे और छात्र भी अपने सामर्थय के अनुसार गुरुदक्षिणा देते थे किन्तु कोई भी राजा इन गुरुकुलों के प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं करता था। इन गुरुकुलों का प्रारम्भ वास्तव में उन परिशदों से हुआ जिनमें चार से लेकर 21 तक विद्वान और मनीशी किसी नैतिक सामाजिक या धार्मिक समस्या पर व्यवस्था देने के लिए एकत्र हाते थे। कुछ गुरुकुलों ने वर्तमान आवास विश्वविद्यालय (रेजीडेंशल यूनिवर्सिटी) का रूप धारण कर लिया था। इन गुरुकुलों में वेद, वेदांग, दर्शन, नीतिशास्त्र, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, दंडनीति, सैन्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, धनुर्वेद

आदि सभी विषयों की उच्चतम शिक्षा दी जाती थी और जब छात्र, सब विघाओं में पूर्ण निष्णात हो जाता था तभी वह स्नातक हो पाता था। ब्राह्मणों को यह छूट थी कि वे चाहें तो जीवन भर विद्यार्जन करते रहे।

भारत का उच्च शिक्षा तंत्र

भारत का उच्च शिक्षा तंत्र विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च षिक्षा तंत्र है। विगत 50 वर्षों में देश के विश्वविद्यालयों की संख्या में 11.6 गुना, महाविद्यालयों में 12.5 गुना, विद्यार्थियों की संख्या में 60 गुना और शिक्षकों की संख्या में 25 गुना वुद्धि हुई है। सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और साथ ही उच्च शिक्षा की अवस्थापना सुविधाओं पर विनियोग भी तदनुरूप बढ़ा है।

उच्च शिक्षा जो राष्ट्र की आधारशिला होती है उसमें गुणवत्ता का सवाल एक महत्वपूर्ण प्रष्न है। गुणवत्ता उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है। गुणवत्ता के बिना शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पाएगी यह कहना शायद बहुत बड़ी भूल होगी और शिक्षा में, विशेषकर उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के अभाव में असंभव भले न हो किन्तु कठिन जरूर है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता इसलिए जरूरी है कि उच्च शिक्षा के अंतर्गत आने वाले अनुषासन सर्वाधिक कुशलता कि मांग करते हैं। डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री या फिर विभिन्न विषयों के विद्धान, शोधार्थी, इनकी गुणवत्ता ही इन्हें सफल बनाती है और बिना गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के यह संभव नहीं है। क्या कारण है कि यदि आप किसी छात्र से यह पूंछे कि आप अपनी उच्च शिक्षा कहाँ से लेना चाहेंगे तो वह कैम्ब्रिज, ऑक्सफोर्ड या किसी अन्य विदेशी या आईआईटी जैसे उच्च संस्थान कि बात करेगा। इसके पीछे कार्य करने वाला महत्वपूर्ण कारण यहाँ कि गुणवत्ता ही है जो छात्र तो क्या प्रोफेसरों एवं शिक्षाविदों को भी आकर्षित करती है।

उच्च शिक्षा कि गुणवत्ता से तात्पर्य उच्च शिक्षा का उन समस्त मानकों पर खरा उतरना है जिनको ध्यान में रखकर यह प्रदान कि जा रही है। यदि शिक्षा वर्तमान जीवन कि चुनौतियों को कुशलतापूर्वक हल कर देती है, छात्र को अत्याधिक दक्ष बनाती, उसमें आधुनिकतम ज्ञान–विज्ञान के कुशलतम उपयोग को संभव बनाती है तथा उसे इस योग्य बनती है कि वह नवीन ज्ञान का सृजन कर सके तो यह माना जाता है कि शिक्षा गुणवततापूर्ण है।

वर्तमान समय में भारत में गुणवत्ता उच्च शिक्षा के क्षेत्र की महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में उभरे हैं। आए दिन हमारे शिक्षाशास्त्रियों द्वारा इस विषय पर बार–बार चिंता प्रकट की जा रही है जिसे हम सभी विभिन्न समाचार चैनलों, अखबारों, पत्रिकाओं में पढ़ सुन रहे हैं। महामहिम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी देश के नाम सम्बोधन में इस विषय पर अपनी चिंता जाहिर कर चुके हैं। भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का अनुमान हम विभिन्न संस्थानों द्वारा जारी आंकड़ों एवं रैंकिंग के द्वारा आसानी से समझ सकते है।

भारतीय उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के संबंध में होने वाले शोधों एवं सर्वेक्षणों पर यदि ध्यान दिया जाय तो एक तथ्य जो बहुत ही महत्वपूर्ण रूप में हमारे सामने आता है वह है उच्च

शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों का एक बड़ी संख्या में बेरोजगार होना है। यह बेरोजगारी अवसरों की कमी की वजह से उतना नहीं है जितना की दक्षता या कहे की शिक्षा में गुणवत्ता की कमी के कारण। विभिन्न सर्वेक्षणों में तमाम नियोक्ता संस्थानों ने यह माना है कि भारत के उच्च तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों में आधे से भी कम विद्यार्थी अपनी शिक्षा के अनुरूप कार्य कर पाने में समर्थ है। यह अकारण नहीं है की आजकल बी.टेक, पीएचडी जैसे उच्च शिक्षा डिग्री धारी युवा चपरासी या अन्य चतुर्थ श्रेणी की नियुक्तियों में बड़ी संख्या में आवेदक के रूप में देखे गए हैं।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में होने वाले विभिन्न शोधों में भी यह बात स्पष्ट रूप से उभर कर आई है कि हमारे उच्च शिक्षा प्राप्त नौजवानों में 70 प्रतिशत से भी अधिक अकुशल हैं जो आधुनिक तकनीकी विकास एवं निर्धारित योग्यता के अनुरूप कार्य करने में सक्षम नहीं हैं। यह समस्या यहीं पर समाप्त नहीं हो जाती; शोध कार्य जो उच्च शिक्षा का आधार स्तम्भ माना जाता है उसमें भी गुणवत्ता में खासी कमी आई है। आज भले ही थोक के भाव शोध कार्य हो रहे हों किन्तु उनमें यदि अच्छे गुणवत्तापूर्ण शोधों की गणना की जाय तो वे मात्र गिनें चुनें ही प्राप्त होगें। आज जरूरत उच्च शिक्षा को और अधिक गुणवत्ताा बनाने की है किन्तु वह किसी अराजकता का रूप ने धारण करे इसका भी ध्यान रखना जरूरी है। आज जरूरत ऐसी नीतियाँ बनाने एवं उन्हें लागू करने की है जिससे हमारी वर्तमान उच्च शिक्षा विश्व स्तर की एवं गुणवत्तापूर्ण हो सके। इस हेतु हमें अपने पाठयक्रम, पठन–पाठन के तरीकों आदि में व्यापक बदलाव करना होगा। उन्हें आज की जरूरतों के अनुकूल बनाना होगा। आज जिस प्रकार की नयी–नयी शिक्षण प्रौद्योगिकी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आ रही है उन्हें भी अपनाना होगा साथ ही इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारा जोर शिक्षा को देश की जरूरतों के अनुरूप तथा विश्वस्तर की बनाने पर हो। क्योंकि आज दुनिया में उच्च शिक्षा जिस तीव्र गति से विकास कर रही है हमें स्वयं को भी उन मानदंडों पर खरा उतरना होगा। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे शोधों को विश्व स्तर का बनाना होगा और इस हेतु हमें उच्च शिक्षा में योग्य प्रतिभाओं को आने का अवसर सुलभ कराना होगा। आज हमारे देश के तमाम प्रतिभावना छात्र और अध्यापक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं करने पाते और जो है भी वो दिन– प्रतिदिन विदेशों को पलायान करते जा रहे है। इस हेतु महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि उच्च शिक्षा संस्थानों में पर्याप्त वृद्धि की जाय। उनमें पर्याप्त मात्र में शिक्षण, पठन–पाठन हेतु सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाय। साथ ही उच्च शिक्षा में आने वाले समस्त छात्रों एवं अध्यापकों कि जवाबदेही सुनिश्चित कि जाय। उच्च शिक्षा में होने वाली नियुक्तियों में योग्यता को ही एक मात्र मानक बनाया जाय।

आज उच्च शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के कारणों में एक कारण उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्र शिक्षक असंतुलन भी है। विभिन्न शिक्षण संस्थानों के प्राध्यापकों के आधे पद रिक्त पड़े हुए है तथा छात्रों को पढ़ाने के नाम पर मात्र खानापूर्ति हो रही है। अतः इस स्थिति को समाप्त किया जाना भी जरूरी है।

उच्च शिक्षा में नयी चिंतन पदधितियों को बढ़ावा तथा उचित मात्रा में अवसर प्रदान किया

जाना चाहिए। उच्च शिक्षा में शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए साथ ही इसकी गुणवत्ता पर भी ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इस हेतु महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि योग्य विद्यार्थियों को, जो अच्छा शोध कार्य कर सकें उन्हें इस प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाय। इसमें उनकी कुशलता तथा गुणवत्ता को परखकर आगे के लिए अवसर दिया जाय। इसके साथ ही शोध के दायरे में व्यापक बदलाव करना होगा तथा उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुकूल करना होगा।

इस प्रकार शिक्षा सिर्फ सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक जीवन में भी उपयोगी हो ऐसा पाठ्यक्रम एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हमें तैयार करनी होगी। उच्च शिक्षा को चरित्र निर्माण से लेकर जीवन निर्माण एवं व्यावसायिक कुषलता से लेकर तकनीकी कुशलता तक विस्तष्त करना होगा।

संदर्भ–सूची

- *भारतीय शिक्षा का इतिहास – शंकर विजयवर्गीय*
- *शिक्षा कैसी हो– पवित्र कुमार शर्मा*
- *उच्चशिक्षा में गुणवत्ता और स्वायत्ता–सुशील कुमार तिवारी*
- *शिक्षा के उद्देश्य– प्रो० हवाइडेड*
- *उच्चशिक्षा की दशा एवं दिशा– श्री अतुल कोठारी*
- *नेट के द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर*